

बड़ा सच... एक नहीं हैं आत्मा और परमात्मा

आत्मा और परमात्मा को एक समझना मानव की साबसे बड़ी भूल है। परमात्मा से हमारा वही संबंध है जो एक पिता-पुत्र का होता है। परमात्मा शिव तो हम आत्माओं के पिता हैं। हम उनकी संतान हैं। फिर आत्मा-परमात्मा एक कैसे हो सकते हैं? परमात्मा परमधार के निवासी हैं। हम सब आत्माएं भी परमधार की निवासी हैं। वे अजन्मा, अकर्ता, अभेदा हैं जबकि मनुष्यात्माओं का जन्म होता है। वह शशीर के माध्यम से जो कर्म करती है उसका फल भी भोगती है। परमात्मा सर्व गुणों, शक्तियों, ज्ञान, प्रेम, पवित्रता के साथ है तो हम आत्माएं उसका स्वरूप हैं। परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। आत्माओं का स्वरूप भी ज्योतिर्बिन्दु है। वह तीनों लोकों के रथवाकार, परमशक्ति हैं।

नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना के लिए साधारण मनुष्य तन का लेते हैं आधार

कहा जाता है बिन पा चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ, कहि विधि नाना।

चूंकि परमात्मा पिता का अपना शरीर नहीं होता। वह तो ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप, अजन्मा, अकर्ता है। इसलिए इस दिव्य कार्य के लिए साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर परमात्मा प्रवेश करते हैं और उन्हें नाम देते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। परमात्मा शिव पहले ब्रह्मा को पुराणों दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार करते हैं।

सन् 1937 में हीरे-जावाहारत के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अपी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से ग्रान्थ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह

एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेन है। चूंकि परमात्मा को भारत और बन्दे मातस् की गाथा को भी चरितार्थ करना था, इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश सखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया। परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुखा करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़े वाली अधिकतर माताएं-बहनें और कुछ वाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप व त्याग की शक्ति दूसरों को भी अद्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

देवों के भी देव का हो रहा आगमन



परमात्मा तो जानी जाननहार है

ब्रह्मा बाबा के साथ साकार में रहने का सौभाग्य मिला। मैंने अपने जीवन में ईश्वरीय शक्तियों को महसूस किया है। परमात्मा आयुक्त है, यह सच है। जिस तह परे जीवन में एक अप्राप्यताव बहलाव आया। स्थापना का कार्य कर रहे हैं।

ब्रह्माकुमार ब्रजोलाल, प्रधान संपादक, पूर्णी मैत्रीजी, दिल्ली

परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं



हमारे शर्मग्रन्थों और शास्त्रों में उल्लेख है कि परमात्मा की प्राप्ति के लिए एक-मनुष्यों ने भी तप-साधना की। यहां स्वाल ये है कि यदि आत्मा-परमात्मा एक होते तो उन्हें साधना करने की क्या जरूरत थी?

मन से होता है परमात्मा का मिलन

रुहानी प्यार केवल भगवान से ही मिलता है। इसकी तुलना में हर सांसारिक चीज़ छोटी लगती है। जब से शिव बाबा से साकार में मिलन हुआ है ये परिवर्तन इतना सहज हो रहा है कि जैसे रात के बाद सरोवर होता है। परमात्मा ने हमें हीरा बाल दिया। - कविता मिश्रा, सुव्याय व्यायिक मजिस्ट्रेट, आगरा

परमात्मा से मिलन अनोखा

पहली दफा परमात्मा से मिलन मनोन का अनुभव दाढ़ी हृदयमौहिनी जी के मध्यम से हुआ। ये मिलन अनोखा था। मैं भगवान से मिला, तब मुझे भगवान ने वेदवानादिया। इसमिलनसे अंतरिक सुख की अनुभूति हुई। मेरा मन अब भी बाब-बाबर उस अनुभव में रहे जाता है। अरुण शर्मा, पूर्व साराद, असरम

परमात्मा ने स्वयं दिया था अपना परिचय

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें गति के समय अचानक इस दुनिया के भयकर महाबिनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हाथयारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उत्तरे देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आयी। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निरकर परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि-

निजानन्द स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरूपम्

शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्।

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह अदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुण कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग के लिए प्रकाशित एवं डीवी सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित। सलाहकार संपादक: प्रो. कमल दीक्षित संपादक: ब्र.कु. कोमल, संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र।

RNI NO. - RJHIN/2013/53539, Postal Regd. - RJ/SRO/9662/2015-2017, Posting on 18 & 20 of Every Month only at shantivan Sub-Post Office, Abu Road, Raj - 307510

परमात्मा की पहचान के पांच आधार

जो सर्वमान्य हो अर्थात् सभी धर्मों में स्वीकार्य हो...

परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वमान्य हो, यानी जिसे राष्ट्री धर्मों की आत्माएं स्वीकार करें, योकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं का परमपिता है। उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, औंकार, अल्ला, खुदा, गॉड, बूर इत्यादि परं पूर्ण है तो एक ही।

जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ और परम हो...

परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम या परम हो यानी उसके ऊपर कोई छहती न हो। परमात्मा का कोई मातापिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक, परम सत्यरु और परम रक्षक हैं। इसलिए उसकी महिमा में गाया जाता है - ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धार, ऊंचा तेरा हार काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान। तो जिसका नाम, धार, गुण और कर्तव्य सबसे ऊंचा है वही परमात्मा है।

जो सबसे न्यारा और कर्म फल, पाप-पूण्य से मुक्त हो...

परमात्मा उसे कहेंगे जो सबसे व्याप्त हो। परमात्मा ज्वल-मरण, कर्म-फल, पाप-पूण्य, सुख-दुःख के घटकों में वही आते हैं। परमात्मा इस पृथकी की पीरवर्णन-क्रिया अर्थात् सतो-रजो-तमो से भी व्याप्त है। वह सर्व प्राकृतिक घटनों से मुक्त है। इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का प्यारा माना गया है। ईश्वर से ऊंचा तो कोई वही नहीं है परतु उसके समान भी कोई वही नहीं है।

जो सर्व हो अर्थात् सबसुख जानता हो...

परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व हो अर्थात् वह सबसुख जानता हो। किसी भी संदर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में वही आती है तो ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, भगवान जाने या अल्लाह जाने अर्थात् परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्व हो...

जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो...

परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो। परमात्मा कर्म-फल, भगवान जाने की सर्वज्ञता से मिलता है। ये अर्थात् वह सर्व गुणों और सुख-दुःख के घटकों में वही रहता है। उसी के लिए गाया गया है, देवे वाला जब भी देता है तो उसके फाद कर देता है।

नार.... हम किसी भी साकार देवघारी व्यक्ति को परमात्मा नहीं कह सकते हैं, क्योंकि साकार व्यक्ति कभी भी सर्वात्मा वही हो सकता जो सभी धर्मों की आत्माओं को स्वीकृत हो। साकार देवघारी के माता-पिता, शिक्षक, गुरु, रक्षक अवश्य ही होते हैं इसलिए उसे सर्वोच्च भी नहीं हो सकता है क्योंकि साकार के साथ ज्वल-मरण, कर्म-फल, पाप-पूण्य और सुख-दुःख आदि भी संलग्न हैं। साकार सर्व का ज्ञाना दाता भी नहीं बन सकता है। वह तो और ही ईश्वर से ज्ञान, सुख, शांति और शोकों माझाता ही रहता है। इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकारी देवघारी व्यक्ति परमात्मा नहीं हो सकता है।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

Awakening with Brahma Kumaris - Sis. Shivani	Peace of Mind
Address: 265-2, 7 th E, Sector 10, Noida, U.P. 201301, India	Mobile: +91 9810109060
Landline: +91 0120 250000, 250001, 250002, 250003, 250004, 250005, 250006, 250007, 250008, 250009, 250010, 250011, 250012, 250013, 250014, 250015, 250016, 250017, 250018, 250019, 250020, 250021, 250022, 250023, 250024, 250025, 250026, 250027, 250028, 250029, 250030, 250031, 250032, 250033, 250034, 250035, 250036, 250037, 250038, 250039, 250040, 250041, 250042, 250043, 250044, 250045, 250046, 250047, 250048, 250049, 250050, 250051, 250052, 250053, 250054, 250055, 250056, 250057, 250058, 250059, 250060, 250061, 250062, 250063, 250064, 250065, 250066, 250067, 250068, 250069, 250070, 250071, 250072, 250073, 250074, 250075, 250076, 250077, 250078, 250079, 250080, 250081, 250082, 250083, 250084, 250085, 250086, 250087, 250088, 250089, 250090, 250091, 250092, 250093, 250094, 250095, 250096, 250097, 250098, 250099, 2500100, 2500101, 2500102, 2500103, 2500104, 2500105, 2500106, 2500107, 2500108, 2500109, 2500110, 2500111, 2500112, 2500113, 2500114, 2500115, 2500116, 2500117, 2500118, 2500119, 2500120, 2500121, 2500122, 2500123, 2500124, 2500125, 2500126, 2500127, 2500128, 2500129, 2500130, 2500131, 2500132, 2500133, 2500134, 2500135, 2500136, 2500137, 2500138, 2500139, 2500140, 2500141, 2500142, 2500143, 2500144, 2500145, 2500146, 2500147, 2500148, 2500149, 2500150, 2500151, 2500152, 2500153, 2500154, 2500155, 2500156, 2500157, 2500158, 2500159, 2500160, 2500161, 2500162, 2500163, 2500164, 2500165, 2500166, 2500167, 2500168, 2500169, 2500170, 2500171, 2500172, 2500173, 2500174, 2500175, 2500176, 2500177, 2500178, 2500179, 2500180, 2500181, 2500182, 2500183, 2500184, 2500185, 2500186, 2500187, 2500188, 2500189, 2500190, 2500191, 2500192, 2500193, 2500194, 2500195, 2500196, 2500197, 2500198, 2500199, 2500200, 2500201, 2500202, 2500203, 2500204, 2500205, 2500206, 2500207, 2500208, 2500209, 2500210, 2500211, 2500212, 2500213, 2500214, 2500215, 2500216, 2500217, 2500218, 2500219, 2500220, 2500221, 2500222, 2500223, 2500224, 2500225, 2500226, 2500227, 2500228, 2500229, 2500230, 2500231, 2500232, 2500233, 2500234, 2500235, 2500236, 2500237, 2500238, 2500239, 2500240, 2500241, 2500242, 2500243, 2500244, 2500245, 2500246, 2500247, 2500248, 2500249, 2500250, 2500251, 2500252, 2500253, 2500254, 2500255, 2500256, 2500257, 2500258, 2500259, 2500260, 2500261, 2500262, 2500263, 2500264, 2500265, 2500266, 2500267, 2500268, 2500269, 2500270, 2500271, 2500272, 2500273, 2500274, 2500275, 2500276, 2500277, 2500278, 2500279, 2500280, 2500281, 2500282, 2500283, 2500284, 2500285, 2500286, 2500287, 2500288, 2500289, 2500290, 2500291, 2500292, 2500293, 2500294, 2500295, 2500296, 2500297, 2500298, 2500299, 2500300, 2500301, 2500302, 2500303, 2500304, 2500305, 2500306, 2500307, 2500308, 2500309, 2500310, 2500311, 2500312, 2500313, 2500314, 2500315, 2500316, 2500317, 2500318, 2500319, 2500320, 2500321, 2500322, 2500323, 2500324, 2500325, 2500326, 2500327, 2500328, 2500329, 2500330, 2500331, 2500332, 2500333, 2500334, 2500335, 2500336, 2500337, 2500338, 2500339, 2500340, 2500341, 2500342, 2500343, 2500344, 2500345, 2500346, 2500347, 2500348, 2500349, 2500350, 2500351, 2500352, 2500353, 2500354, 2500355, 2500356, 2500357, 2500358, 2500359, 2500360, 2500361, 2500362, 2500363, 2500364, 2500365, 2500366, 2500367, 2500368, 2500369, 2500370, 2500371, 2500372, 2500373, 2500374, 2500375, 2500376, 2500377, 2500378, 2500379, 2500380, 2500381, 2500382, 2500383, 2500384, 2500385, 2500386, 2500387, 2500388, 2500389, 2500390, 2500391, 2500392, 2500393, 2500394, 2500395, 2500396, 2500397, 2500398, 2500399, 2500400, 2500401, 2500402, 2500403, 2500404, 2500405, 2500406, 2500407, 2500408, 2500409, 2500410, 2500411, 2500412, 2500413, 2500414, 2500415, 2500416, 2500417, 2500418, 2500419, 2500420, 2500421, 2500422, 2500423, 2500424, 2500425, 2500426, 2500427, 2500428, 2500429, 2500430, 2500431, 2500432, 2500433, 2500434, 2500435, 2500436, 2500437, 2500438, 2500439, 2500440, 2500441, 2500442, 2500443, 2500444, 2500445, 2500446, 2500447, 2500448, 2500449, 2500450,	